राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही एक काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।।

साकेत : नवम सर्ग (1931 ई०, मैथिलीशरण गुप्त)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित साकेत महाकाव्य 1931 ई० में प्रकाशित हुई। कहा जाता है कि साकेत महाकाव्य के सृजन में गुप्त जी को 16 वर्ष लगे। साकेत 12 सर्गों में विभक्त प्रबंधात्मक महाकाव्य है जिसकी भाषा खड़ी बोली है। साकेत का कथानक रामकथा पर आधारित है किन्तु रामकथा का वर्णन करना कवि का उद्देश्य नहीं है।

साकेत का मुख्य उद्देश्य रामकथा में उपेक्षित स्त्री-पात्रों विशेषकर उर्मिला के व्यक्तित्व के अनछुए पक्ष को अभिव्यक्त करना है। साथ ही गुप्त जी ~~साथ~~ अपने राम भक्ति को इन पंक्तियों में व्यक्त किये हैं साथ ही राम की महिमा का भी चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है →

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही एक काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।

मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत के प्रेरणा के रूप में उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर कृत "काव्येर उपेक्षिता" तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत "कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता" निबंध को प्रमुखतः स्वीकारा है। इन दोनों निबंधों की प्रेरणा से गुप्त जी ने साकेत की रचना की।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने काव्य में उर्मिला की उपेक्षित होने पर अपने निबंध काव्येर उपेक्षिता में लिखते हैं →

" संस्कृत साहित्य में काव्य यज्ञशाला की प्रान्त भूमि में जो कितनी ही नारियाँ अनाहूत होकर खड़ी हैं उनमें प्रधान स्थान उर्मिला का ही था। अव्यक्त वेदना देवी उर्मिला एक बार तुम्हारा उदय प्रातःकालीन तारा की भाँति महाकाव्य के सुमेरु शिखर पर हुआ था। उसके बाद अरुण लोक में तुम्हारे दर्शन नहीं हुए। कहाँ तुम्हारा उदयाचल है और कहाँ अस्ताचल- यह प्रश्न करना भी सब भूल गये।"

साकेत के सम्बंध में विद्वानों द्वारा अभिव्यक्त मत

डॉ० नगेन्द्र ⇒ "साकेत जीवन काव्य है। उसमें एक व्यक्ति का जीवन अनेक अवस्थाओं और व्यक्तियों के बीच अंकित है।"

शिवदान सिंह चौहान ⇒ "साकेत रचकर गुप्त जी ने महाकाव्यों की परम्परा में युगांतर स्थापित कर दिया।"

डॉ० नगेन्द्र ⇒ "साकेत में गुप्त जी के कवि जीवन का पूर्ण वैभव मिलता है। अतः उसका कलेवर अलंकृत है। उसमें शकुंतला का वन्य-सौन्दर्य नहीं, उर्वशी का नागरिक विलास है। यहाँ उनकी प्रतिभा ने कविता को नयी-नयी शृंगार-सामग्री से चित्र-विचित्र सजाया है।"

डॉ० वासुदेव नंदन प्रसाद ⇒ "वास्तव में उर्मिला वेदना और मंगलकामना की जीती जागती तस्वीर है। उसे जीवन से बाहर प्राचीन विरहिणियों की कोटि में रखकर देखना उचित नहीं। उसका तप और त्याग अनुकरणीय है। उसके चरित्र निर्माण में नैतिकता, धर्म, समाज, आदर्श और राष्ट्रीय चेतना का समावेश है।"

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ⇒ 'नवम सर्ग को एक नन्हा सूरसागर समझना चाहिए। एक नया गोपिका-विरह सामने आता है।"

आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी ⇒ "साकेत महाकाव्य ही नहीं यह आधुनिक हिन्दी का युग प्रवर्तक महाकाव्य है।"

साकेत : संक्षिप्त कथा

2
स्वत

साकेत का कथानक रामकथा पर आधारित है पर कथा का मुख्य उद्देश्य रामकथा कहना नहीं अपितु उर्मिला और लक्ष्मण के त्याग को दिखलाना है। कथा उर्मिला और लक्ष्मण के संयोग सुख से प्रारंभ होता है और वनवास के बाद समाप्त होता है। साकेत के कारण ही मैथिली-शरण गुप्त को आधुनिक काल का तुलसी भी स्वीकार किया गया है।

प्रथम सर्ग

देवी शारदा की स्तुति प्रथम सर्ग में मंगलाचरण के रूप में किया गया है। साकेत नगरी की भव्यता का वर्णन भी इस सर्ग में किया गया है। इस सर्ग में राजा और प्रजा का पारस्परिक सम्बंध एवं सद्भावना व्यक्त की गई है साथ ही दशरथ के पुत्र राम लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का वर्णन किया गया है। राजा दशरथ की एक मात्र अभिलाषा राम का शीघ्र राज्याभिषेक करना है। रात्रि के अंतिम ~~प्रहर~~ चरण और प्रभात आगमन के समय लक्ष्मण द्वारा हास्य हास - परिहास के बीच राजमहल में नवीन वस्त्र धारण किये खड़ी उर्मिला को राम के राज्याभिषेक की सूचना देते हैं।

द्वितीय सर्ग =>

राम के राज्याभिषेक की सूचना पाकर मंथरा दासी की उदासी और चिंता। मंथरा द्वारा कैकेयी के मन में संशय पैदा करते हुए कहना कि भरत जैसे भाई की अनुपस्थिति में राम का राज्याभिषेक ~~यह बात~~ इस बात से कैकेयी की कुबुद्धि व क्रोध का होना। दशरथ से वरदान स्वरूप राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास और भरत का राज्याभिषेक माँगना द्वितीय सर्ग में दिखलाया गया है।

(हाशिये में: वीबालटा / अहाना)

तृतीय सर्ग

राम के चौदह वर्ष के वनवास और भरत के राज्याभिषेक की सूचना का राम और लक्ष्मण तक पहुँचना इस सर्ग में चित्रित है

इस सर्ग में राम इसे सहज स्वीकृत कर लेते हैं परंतु लक्ष्मण क्रोधाग्नि में जलने लगते हैं। इस सर्ग में लक्ष्मण राम के साथ वनागमन करेंगे जिसकी स्वीकृति राम देते हैं। इस सर्ग में दशरथ का बार-बार मुर्छा आना साथ ही राम द्वारा दशरथ को सांत्वना देना चित्रित किया गया है।

चतुर्थ सर्ग →
राम की माता को सम्पूर्ण घटना और निर्णय से अवगत कराना इस सर्ग में दिखलाया गया है। माता कौशल्या का सीता के वनगमन से अत्यधिक पीड़ित दिखलाया गया है। राम का सीता को वन न जाने के लिए बहुत समझाना परंतु सीता का न मानना और कहना →

मेरी यही महामति है, पति ही पत्नि की गति है।
तथा अथवा कुछ भी न हो वहाँ, तुम तो हो जो नहीं यहाँ।

~~चौथे सर्ग~~ अत्यंत मार्मिक प्रसंग चतुर्थ सर्ग में दृष्टिगत की गई है क्योंकि यहाँ उर्मिला की स्थिति अत्यंत करुणा एवं उपेक्षित है। लक्ष्मण भाई और भाभी की सेवा के लिए उर्मिला को छोड़कर जा रहे हैं। उर्मिला का हाड़ मांस युक्त स्त्री के रूप में नहीं अपितु त्याग और समर्पण की देवी के रूप में चित्रण यहाँ किया गया है। कर्तव्य की महत्ता उसे महान बना देती है। वह अपनी भावनाओं को अपने अंदर ही दफन कर मन को समझाती है →
हे मन! तु प्रिय पथ का विघ्न न बन।

पाँचवाँ सर्ग → राम-सीता-लक्ष्मण वन गमन इस सर्ग में द्रष्टव्य है। नगर वासियों की पीड़ा है के साथ माता कैकेयी के कुटिल कर्म की निंदा की गई है। अयोध्या की सीमा को पार कर क्रमशः तमसा, गोमती और गंगा नदियों के तट पर पहुँचना। निषाद

राम द्वारा गंगा पार करना। इसके बाद प्रयाग पार कर चित्रकूट पहुँचना।

छठा सर्ग →
छठे सर्ग से मैथिली शरण गुप्त जी ने उर्मिला की मुद्रित करुणा दशा का चित्रण प्रारंभ करते हैं। राजा दशरथ और रानियाँ शोक संतप्त हैं। सुमंत को अकेले लौटा देखकर राजा दशरथ व्याकुल दिखते हैं और अंततः इसी सर्ग में इनकी मृत्यु दृष्टिगम करायी गई है।

सप्तम सर्ग →
भरत और शत्रुघ्न की ननिहाल से वापसी इस सर्ग में चित्रित है। भरत किसी अमंगल की आशंका से बैचेन हैं। महल में आकर सारी सूचनाएँ पाकर भरत पर वज्रपात, भरत इन सब का स्वयं को अपराधी मानते हैं और शोक के कारण अचेत हो जाते हैं। गुरु वशिष्ठ भरत को धैर्य बंधाते हैं। अगले दिन राजा दशरथ का दाह संस्कार इस सर्ग का विषय है।

आठवाँ सर्ग
साकेत के आठवें सर्ग में चित्रकूट का दृश्य दिख-लाया गया है। राम एक वृक्ष की छाया में पड़ी हुई शिला पर बैठे हैं वहाँ भरत शत्रुघ्न का आगमन व मिलाप। दोनों का दौड़कर राम और सीता के चरणों में लेटना। श्वेत वस्त्रों में माँ को देखकर राम का करुणा से चित्कार करना इस सर्ग में दिखलाया गया है। मुनि वशिष्ठ इस अवसर पर सभी को धैर्य बंधाते हैं। राम दिवंगत पिता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। कैकेयी राम को अयोध्या लौटने का अनुरोध करती है शोक और आत्मग्लानि से परिपूर्ण कैकेयी यहाँ दृष्टिगत है। इसी सर्ग में भरत राम की चरण पादुका लेकर अयोध्या लौटते हैं। इस बीच सीता द्वारा एवं उर्मिला का कुटी में क्षणिक मिलन करवाना तथा दोनों अपनी अन्तर्व्यथा अभिव्यक्त नहीं कर पाते।

नवम सर्ग

लक्ष्मण के वन को चले जाने पर उर्मिला विरह में पागल सी हो गयी है। कभी वह अवधि सुधि को भूलकर अपने प्रियतम से आने के लिए कहती है और कभी सोती हुई भी चौंककर अपने प्रियतम से वापस आने की विनती करती है। इस भाँति वह ममता और आदर्श के बीच झूलती हुई नजर आती है। वह अपने प्रियतम को निरंतर याद करती हुई स्वयं को विरह ज्वाला में जला रही थी। उसका विषम वियोग उसके लिए योग से भी कठिन बन गया था। आठ पहर चौंसठ घड़ी उसे अपने प्रियतम का ही ध्यान रहता था। उसके आँखों से निरंतर आँसू बहते रहते थे। उसकी अंतरंगिनी सखी सुलक्षणा सदैव उसे विरहजन्य वेदनाओं से बचाने का प्रयत्न करती थी पर उसके प्रयत्न भी विफल हो जाते थे। वह रात-दिन अपने प्रियतम ~~[illegible]~~ के लिए इस प्रकार रट लगाए रखती थी ~~[illegible]~~ जैसे वीणा से दिर-दार-दारा (रट) की ध्वनियाँ निकल रही हो। उर्मिला की वेदना इतनी व्यापक बन जाती है कि वह किसी की भी वेदना को सहन करने में असमर्थ है। यहाँ तक कि वह अपने उपवन की लताओं को तथा पौधों को भी यथा इच्छ बढ़ते हुए देखना चाहती है। इसलिए वह अपनी मालिनियों को आदेश भिजवा देती है कि कोई भी किसी पौधे को या लता को न छाँटे वरन ~~[illegible]~~ उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार बढ़ने दे।

विरह वेदना को भुलावा देने के लिए विरहिणी द्वारा चित्र बनाना प्राचीन परंपरा है। इसके साथ ही पुस्तक पढ़ना और वीणा बजाना भी विरह वेदना को कम करने के साधन है। इसलिए उर्मिला अपनी सखी से तूली, पुस्तिका और वीणा भी मँगा लेती है पर इन साधनों से भी उसकी वेदना कम नहीं होती। उर्मिला को उनका प्रिय मिलन एक दुःस्वप्न सा जान पड़ता है जो रात और दिन दोनों में कष्टदायक होता है

120 →

उर्मिला को खाने-पीने में कोई रुचि नहीं रह गई है। न तो विभिन्न प्रकार के व्यंजन ही अच्छे लगते हैं और न उनकी बड़ाई ही। वह तो यही चाहती है कि यदि उसके प्रियतम भी होते तो वह सभी पकवान उनको अपने हाथों से बनाकर खिलाती। वस्तुतः उसके लिए भोग भी रोग बन गया है।

वह शलभ को दीपक की लौ पर जलते देखती है तो यही निष्कर्ष निकालती है कि प्रेम की पूर्णता दोनों ओर से प्रेम पालन में होती है, जैसे कि पतंगे के साथ-साथ दीपक भी जलता रहता है। कभी वह विरह से इतनी अधिक व्यथित हो जाती है कि व्यथा को नहीं संभाल पाती। पुष्पों की सुवासित सुगंध उसे सहन नहीं होती। वह प्रिय मिलन के लिए अत्यंत अधीर हो जाती है। उनकी सारी रात जागते-जागते बिलखते तड़पते ही बीत जाती है। तारे छिप जाते हैं प्रभात आ जाता है। वह प्रातः कालीन सुषमा में कुछ देर के लिए डूबकर अपने विरह व्यथा को कुछ क्षण के लिए भूल जाती है।

षट्ऋतु वर्णन

बसंत ऋतु

कुछ समय बीतने पर बसंत ऋतु आ जाती है। यह ऋतु विरहिणी के लिए अत्यंत कष्टदायक होती है। बसंत ऋतु के आने से चारों ओर प्राकृतिक सुषमा बिखर जाती है। निर्मल जल से भरी हुए तलाब में हंसों का सानंद किल्लोल करते देखकर उर्मिला का हृदय कसक उठता है क्योंकि उसने भी तो अपने प्रियतम के साथ इस ऋतु में अनेक आनंद क्रिड़ाएँ की थी।

ग्रीष्म ऋतु

ग्रीष्म ऋतु की भीषणता भी उसकी विरह वेदना को उद्दीप्त करती हैं सभी प्राणियों को व्यासेद देखकर उसकी उदारता सजग हो उठती है। पर वह उससे विचलित नहीं होती क्योंकि वह जानती है कि ग्रीष्म के ताप से ही फलों में परिपक्वता आती है।

वर्षा ऋतु

तत्पश्चात वर्षा ऋतु प्रारंभ होता है। आकाश में उमड़-घुमड़कर घोर विरहिणी घन छा जाते है और समूची पृथ्वी जल से भीगकर शीतल बन जाती है। सारी प्रकृति सरसती और दरसती है पर विरहिणी ऊर्मिला को अपनी वेदना से फिर भी मुक्ति नहीं मिलती। फिर भी वह आनंद से नृत्य करते मयूर आदि के सुख का पूर्णतया ध्यान रखती है। ऊर्मिला को अपनी संयोगावस्था की एक सुखद घटना याद आ जाती है। वर्षा ऋतु में वे एक बार हिंडोले में झूल रही थी कि तभी उसके प्रियतम वहाँ आ गये। उसने उन्हें भी हिंडोले में बिठा लिया। भय का बहाना करके वह वहीं उससे लिपट गई। यह घटना याद आते ही विरहिणी ऊर्मिला व्यथित हो उठती है। और सोचती है कि उसकी कोई भी कामना पूरी नहीं हो सकी। अपने आराध्य पर वह मनभाये फूल भी नहीं चढ़ा सकी। आकाश में उमड़ते और कड़कते बादल उसकी विरह वेदना को और भी बढ़ा देता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे बादलों के रूप में किसी व्यथिता के हृदय के भाव अटक भटक कर भड़क रहे हो।

शरद ऋतु

फिर शरद ऋतु आती है। विरहिणी ऊर्मिला इस शरद ऋतु में और भी विरह की अग्नि में जल रही है। जो प्रकृति संयोगावस्था में सुख प्रदान करते थे आलम्बन बनकर वही वियोगावस्था में उद्दीपन विभाव लिये हुए प्रकृति विरह वेदना को और अधिक उद्दीप्त कर रही है।

हेमंत ऋतु

इसके पश्चात हेमंत ऋतु आती है। सारा संसार उसके दिये हुए सुख से सुखी है पर ऊर्मिला तो अपने विरह दुःख में ही डूबी है। उसे याद आता

है कि जब वह स्त्री-सी ऊसी हुई अपने प्रियतम के पास पहुँच जाती थी तो वे कितने प्रसन्न होते थे और हेमंत ऋतु को उपकारी समझते थे। अपनी इस विरहावस्था में भी उर्मिला को अपनी प्रजा का निरंतर ध्यान लगा रहता है, वह अपने देवर से पूछती है कि इस बार कपास, धान, ईख की पैदावार कैसी हुई है। अपने देवर से यह पता चलता है कि यद्यपि इस बार कृषकों की फसल अच्छी हुई है पर उनमें वह स्वाद नहीं है। इसके विपरीत राज्य सभी प्रकार के अनर्थों का मूल है क्योंकि इसी के कारण राम को वनवास मिला है।

फिर वह सोचती है कि प्रियतम तभी लौट पायेंगे जब पृथ्वी चौदह चक्कर पूरे कर लेगी अर्थात चौदह वर्ष पूरे हो जायेंगे।

शिशिर ऋतु

शिशिर ऋतु भी विरहिणी के भावों को उद्दीप्त करने वाली होती है। शिशिर से जहाँ उर्मिला कस्तूरी गंध से उन्मत्त रहती थी वहाँ आज सूनापन छाया हुआ है। वह तो इस ऋतु को अपने शरीर में ही देखती है जहाँ भावों का पतझड़ भी है शरीर का कम्पन भी है, मुख की पांडुरता भी है और पतिपत्र के प्रति अपनी दया भी व्यक्त करती है। वह स्वयं में निर्मिता देखती है अतः शिशिर का स्वागत करती है क्योंकि उसके अंत में बसंत ऋतु का आदि छिपा हुआ होता है।

इस प्रकार साकेत के नवम् सर्ग में उर्मिला की दुःखी विरहिणि को चित्रित किया गया है। अपने अपार विरह में उर्मिला को अपने प्रियतम के हित का ध्यान सदैव बना रहता है।

~~उर्मिला~~

इस प्रकार हम कह सकते हैं साकेत में मैथिली-शरण गुप्त ने नवम् सर्ग को सबसे अधिक विस्तार दिया है। इसमें उर्मिला की व्यापक एवं बहुमुखी वेदना का चित्रण

है पर इसमें प्रबंधात्मकता नहीं है। अनेक छंदों से सज्जित यह सर्ग पूर्णतया मुक्तक शैली में लिखा गया है। इसलिए इसमें उर्मिला की विरह वेदना के विविध पक्षों का उद्घाटन करने में कवि को विशेष रूप से सफलता मिली है।

दशम् सर्ग

दशम् सर्ग में उर्मिला अपने अतीत के स्मृतियों में डूबी रहती है तथा अतीत में अपने प्रियतम के मिलन को याद कर वर्तमान में विरह से तप्त हो रही है।

एकादश सर्ग

शत्रुघ्न द्वारा साकेत नगरी की व्यवस्थाओं का वर्णन इस सर्ग में किया गया है साथ ही इस सर्ग में हनुमान द्वारा लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने और मूर्छित होने की कथा कही गई है यह प्रसंग उर्मिला को और भी व्यथित करता है।

द्वादश सर्ग

भरत का सेना तैयार करना। उर्मिला का वीरोचित रूप इस सर्ग में दिखलाया जाता है साथ ही वशिष्ट द्वारा युद्ध का दृश्य दिखलाया गया है जिसमें राम द्वारा रावण को मारा जाता है तथा राम-सीता लक्ष्मण साकेत नगरी में आते हैं। भरत मिलन होता है उर्मिला और लक्ष्मण का पुनः मिलन इस सर्ग में दिखलाया गया है। इस प्रकार साकेत समाप्त होता है जिसमें राम के आख्यानक का नवीन रूप देकर उर्मिला एवं लक्ष्मण को केन्द्र में रखकर इतिवृतात्मक रूप में इसे चित्रित किया गया है।

पतंजलि IAS एकेडमी

HARIOM TOWER, CIRCULAR ROAD, RANCHI-834001

झारखण्ड TGT हिन्दी के लिए

नया बैच शुरू...

मुख्य विशेषताएं:

- प्रत्येकदिन Live+Recorded कक्षा
- Upgraded Study Materials
- Sectional & Full Length Test
- Revision & Doubt Class

नया बैंच! नया जोश! नया उत्साह!

Download Patanjali Civil Academy App.

4th Floor, Hariom Tower, Circular Road, Ranchi-834001

Contact : 93862-86891 / 98016-64822 / 74796-09256